"पैगाम"

पैगाम यानी के संदेश । धुर यानी के आधार अथवा मूल विशेष का आत्मा दे नाउ यानी के मूल का अंश अर्थात परमात्मा का अपना स्वंय का "निजी विशेष अंग ।" जो इस संसार रूपी भयानक दलदल में फँसा हुआ है, तड़प रहा है स्वंय की मुक्ति अथवा कल्याण के हेतू । पुकार रहा है मदद विशेष के लिये सदा के वास्ते घोर दुखों से छुटकारा पा जाने के लिये । पुकार रहा है निरन्तर कोई उसे सहारा देवे कोई इसकी मदद

करना तो दूर पुकार सुनने को भी तैयार ही नहीं, उल्टा उसी की मजबूरी का फायदा उठा करके उसी के साथ बलात्कार करने में ही अपने को श्रेष्ठ स्थापित कर रहा है निश्चित रूप से । यह बचने के लिये जहाँ भी स्थान विशेषों पर जाता है सभी जगह पर इसके साथ यही बलात्कार जैसा ही अथवा इससे भी कहीं बढ़कर सभी इसकी अस्मत लूटना ही केवल अपना स्वंय का अधिकार अथवा धर्म विशेष ही समझते हैं निश्चित रूप से । कोई इसकी चीख-पुकार को नहीं सुनता सभी केवल अपने स्वार्थो को पूरा करने में ही लगे हुऐ हैं निश्चित रूप से यह जगह-2 ठोकरें खाने पर मजबूर कर दिया गया है । अपने अंश का ऐसा भयानक हशर अथवा हाल होता देख प्रभु से न रहा गया तथा उसने अपना "स्वंय का निज संदेश" अपनी "प्यारी दुलारी आत्माओं विशेष" के जरिये अपने अंग विशेष के कल्याण के हेतू धुर से प्रत्यक्ष किया । वह दुर्लभ आत्मा विशेष जो इस घोर नर्को से भी बड़ी भयानक संसार रूपी दलदल से स्वंय को मुक्त करवाना पसन्द करती है केवल उसी के "निज कल्याण" के हेतू "अकाल पुरख परमात्मा" ने अपनी "रजा विशेष" को अपनी "विशेष दया" अथवा भरपूर ताकत विशेष के साथ निश्चित रूप से प्रत्यक्ष किया आत्मा अर्थात केवल स्वंय अथवा निज विशेष। जो "निज विशेष" अपने "मूल" का विचार-शौक़, तड़प अथवा

ख्याल नहीं रखता उसमें और एक दुर्गन्ध से भरे हुऐ मुर्दे में भला फर्क ही क्या हो सकता है ! "विरह-विरह आखिये विरह तू सुलतान । जिस तन विरह न उपजे सो तन जान मंसाण ।" अर्थात मंसाण यानी के वो मनुष्य-मुर्दे की मिट्टी से भी गया बीता व्यर्थ ही है निश्चित रूप से । अब तेरा शौक़ विशेष-2 मुर्दे अथवा कब्रों विशेष-2 शक्लों या नामों, नकली पातशाहों का ही है या अपने मूल "अकाल पुरख परमात्मा" का इसे जरा ध्यान से विचार !

"उठ जाग फरीदा उजू साज" उठ जाग फरीदा (मनुष्य विशेष)-उजू साज यानी के विशय विकारों से हाथ धो ले सदा के वास्ते सुबह यानी के "दुर्लभ अवसर मनुष्य का जन्म।" नमाज यानी के प्रभु को याद करने का केवल एक ढंग मात्र निश्चित रूप से गुजार अर्थात तू अपने इस दुर्लभ अवसर मनुष्य के जन्म को इस जरूरी कार्य प्रभु की भक्ति पर खर्च कर अथवा व्यतीत कर । ये "सुबह" बहुत देर बाद तुझे अकथ "प्रयासों" तथा "प्रभु की विशेष दुर्लभ दया" से ही केवल प्रत्यक्ष हुई है निश्चित रूप से "जो सिर साई (प्रभु) न निवे" जो मनुष्य इस दुर्लभ सुबह अर्थात दुर्लभ मानव जन्म में प्रभु की बन्दगी जो केवल जीव के स्वंय के हेतू कल्याणकारी है नहीं करता उसका क्या होता है ? "सो सिर कप उतार" उस सिर अर्थात मनुष्य को "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" कप उतार यानी के तरह-2 के घोर नर्कों में बहुत-

2 दुख टुकड़े-2 करने शरीर के जैसे अनन्त अभाव दर्द भरे-सहने के लिये अवश्य मजबूर कर ही देती है निश्चित रूप से । चारों तरफ नजर दौड़ा करके देख ले केवल धोखा ही धोखा है निश्चित रूप से । हर तरह "सूक्ष्म अदृश्य ताकतों" ने बड़ी चालाकी से अपना "जाल विशेष" फैला रखा है। मृग-मरीचिका की तरह तेरी जन्मों-2 की प्यास बुझनी तो एक तरफ रही उल्टा तुझे "तड़प-2" कर "आत्मिक मौत" मरने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । हर तरफ केवल नकली चमक ही है यकीनी तौर पर निश्चित रूप से सुख केवल निज के मूल अथवा आधार के चिन्तन अथवा ध्यान में ही है निश्चित रूप से । दूसरा और कोई भी कभी सुपने में भी इन "सूक्ष्म शैतानी ताकतों" के चंगुल से आजाद करवाने में समर्थ हो ही नहीं सकता निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । जिस तरफ भी पैर रखेगा केवल फंदा ही फंदा है निश्चित रूप से । इस जाल से केवल वही मुक्त करवाने में समर्थ है जिसने इस खेल को रचा अथवा प्रत्यक्ष किया है निश्चित रूप से जो स्वंय इस जाल का ही केवल अंश मात्र है फिर भला वो कैसे तुझे मदद करने में काबिल हो सकता है सुपने में भी तेरा सच्चा तथा प्रत्येक काल में केवल समर्थ हमदर्द केवल "अकाल पुरख परमात्मा" ही है निश्चित रूप से । अपने इस "उत्कृष्ट मूल" को भुला करके और-2 के पीछे दौड़ना तुझे "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी

ताकतों" के दरबार में अवश्य "शर्मिंदा" होने के लिये मजबूर करवा ही देगा निश्चित रूप से।

"परमात्मा अथवा गुरू विशेष" के नाम या मत-धर्म विशेष के आधार पर छल-कपट-मांस-जुआ-शराब-काम इत्यादि का धन्धा अथवा व्यवहार करने वालों के लिये प्रभु के दरबार से "दुर्लभ निश्चित प्रमाण पत्र"- "घोर-2 दुर्लभ पार्कों विशेष" की अनन्त काल की "दुर्लभ सैर" निश्चित रूप से आवश्यकतानुसार ! "निरमल मन जन सो मोहे पावा। मोहे कपट छल छिद्र न भावा।" जीव की समस्त चालाकियों का केवल यही नतीजा निश्चित रूप से निकलता है। कोई हर जर्रे में भरपूर लबालब समाया हुआ है निश्चित रूप से फिर कैसे तू उसे धोखा दे देगा ? कोई तुझे निश्चित रूप से निरन्तर देख रहा है। कब कौन से काल विशेष में किसी भी जीव के हृदय में कौन सी तरंग उठेगी उसे भी वह पहले से ही जानता है तथा इस उठने वाली तरंग विशेष का इलाज अथवा इन्तजाम उस समर्थ ने पहले से ही लिख करके निश्चित रूप से रख दिया है फिर तू किस चक्कर में कौन-2 सी विशेष-2 लाईनों अथवा पंक्तियों में लग करके केवल अपनी "स्वंय" की ही "दुर्लभ हस्ती" इस भयावले अंधे कुँऐं में डुबोता चला जा रहा है निश्चित रूप से। तेरा स्वय का कार्य बनेगा तो केवल इस कार्य विशेष से कि तू स्वंय को नियंत्रण में रख अर्थात रहत-मर्यादा

रूपी व्यवहारिक जीवन को जीने का जिन्दगी भर का दृढ़ संकल्प बना यदि बचना चाहता है समस्त दुखों से सदा के लिये तो निश्चित रूप से इस "नियम शास्त्र" को व्यवहारिक रूप से अपना ले केवल अपने स्वंय के कल्याण हेतू । अनन्त जन्मों से चली आ रही अपनी बाहर की व्यर्थ दौड़ से स्वंय को अब उपराम में ले आ निश्चित रूप से । यदि अपना कल्याण चाहता है तो उसे पुकार जो "समर्थ" है-"नउ दर ठाके धावत रहाए" -नउ दर यानी के नौ दरवाजे अथवा शरीर के नौ छिद्र । आँख-नाक-कान के छह मुँह का सात तथा गंद-मूत्र के यानी के इन नौ छिद्रों अथवा द्वारों की वासनाओं या कामनाओं से अपने स्वंय यानी के आत्मा को "उपराम "-धावत यानी के दौड़ने से ठाके अर्थात रोक दृढ़ता से । "दसवें निज घर वासा पाये ।" दसवा द्वार गुप्त है शरीर में ही दोनों आँखों के पीछे निश्चित रूप से । तेरे स्वंय के निज घर तक पहुँचने का साधन रूपी मार्ग तेरे अपने इसी शरीर में हर वक्त मौजूद है जिसे तू अपने साथ लिये फिरता है निश्चित रूप से । "ओथे अनहद शब्द वजह दिन राती ।" "अनहद" अर्थात जिस की कोई सीमा नहीं यानी के कहाँ से शुरू तथा कहाँ पर खत्म कोई नहीं जानता । "शब्द" यानी के केवल "रागमई प्रकाशित आवाज ।" "वजह दिन राती" अर्थात निरन्तर गूंज रहा है बिना किसी विघ्न बाधा के इसी "शब्द विशेष" को "निरबाण कीर्तन" भी कहा गया है जो बिना किसी भी साज के बजाये स्वंय ही

प्रत्यक्ष होता है प्रकाशित हो करके निरन्तर । यही "रागमई प्रकाशित आवाज" जड़ चेतन का आधार "परम चेतन सत्ता" कहलाती है निश्चित रूप से । यही सब कुछ केवल प्रत्यक्ष ही नहीं करती बल्कि सभी को निश्चित रूप से धारण भी करती है यकीनी तौर पर । इसीलिये केवल यही तेरा "सच्चा हमदर्द अथवा मददगार" है निश्चित रूप से । केवल तेरे स्वंय के निज कल्याण के हेतू केवल तुझे समस्त तेरे ही कमाये हुए केवल दुखों से दूर ले जाने के वास्ते निरन्तर उपलब्ध है । तुझे तेरे स्वंय के "निज घर" पर पहुँचा देने के लिये तेरे पुकारने से भी पहले निश्चित रूप से आया हुआ है और इन्तजार कर रहा है तेरे आने का तथा तेरा केवल तेरा मुँह देख रहा है कि कब तू पुकारे अथवा कहे कि चलो चलें ! और यह समर्थ दुर्लभ विशेष मददगार बिना कुछ कहे अथवा लिये केवल उठ करके चल देता है तुझे साथ लेकर के उस आनन्द के सागर तक तुझे केवल तुझे निश्चित रूप से पहुँचा देने के लिये । अब तेरा क्या धन्धा है कि जो आया हुआ है निश्चित रूप से, उसका तो तुझे ध्यान नहीं तथा या तो तू बहुत व्यस्त ही रहता है या फिर किसी और अधूरे तथा अभाव से लबालब भरे हुए किसी मुर्दे अथवा कब्र विशेष को मदद के लिये पुकार रहा है या ध्यान अथवा इन्तजार कर रहा है उस अधूरे के आने का तेरी इस दुर्लभ बुद्धि विशेष का कौन से "पागलखाने विशेष" में इलाज होना संभव है ? अर्थात अब तक कोई नहीं आया ना और न ही

कोई आने अथवा मदद करने में ही समर्थ हो सकता है इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के फंदे विशेष से मुक्त करवाने में कभी सुपने में भी केवल असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से तू गाँठ बाँध ले । "गुरमती सबद सुणावणिया" अब ये "शब्द विशेष" अर्थात केवल "रागमई प्रकाशित आवाज"- सुणावणिया अर्थात तभी प्रत्यक्ष अनुभव होगी अथवा सुनी जा सकेगी जब तू (गुरू+मत) गुरू अर्थात केवल "शब्द विशेष" यानी के "रागमई प्रकाशित आवाज" के "मत विशेष अथवा रजा" - जो तुझे "ग्रन्थ विशेष" के रूप में लिख करके-चूमने चाटने या गोल-2 घूमने के लिये नहीं बल्कि केवल मनन अर्थात लिखित अनुसार केवल व्यवहारिक जीवन जीने के लिये ही दी हुई है के अनुसार व्यवहारिक जीवन जीने के अपने "दृढ़ संकल्प" को प्रत्यक्ष करेगा तभी ये पहले से ही केवल तेरी मदद को ही आया हुआ "शब्द विशेष" केवल तुझे ले जाने के वास्ते ही स्वंय को प्रस्तुत करेगा निश्चित रूप से। "बिन सबदे अन्तर हनेरा" अर्थात इस "रागमई प्रकाशित आवाज" के प्रत्यक्ष होने से पहले जो अन्तर यानी के तेरे शरीर में दोनों आँखों के पीछे अर्थात सुषम्ना नाड़ी अथवा दसवें द्वार पर जो अंधेरा सा होने के कारण ढका हुआ सा है ना, यही अंधेरा सा "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का जाल है "भयानक" केवल तुझे इस गुप्त दसवें द्वार तक न पहुँच जाने देने के लिये सब से बड़ा विघ्न अथवा भ्रम कि यहाँ कुछ नहीं है । वो तेरा

"सच्चा तथा समर्थ मददगार" यहीं पर निरन्तर केवल तेरी मदद के हेतू सदा उपलब्ध है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर ! "न वस्तु लहे न चूके फेरा ।" वस्तु अर्थात "परम चेतन सत्ता" चूके फेरा यानी के चौरासी लाख योनियों में बार-2 जन्म तथा मरन का घोर भयानक दुख रूपी फेरा कभी भी नहीं खत्म होता अर्थात जब तक तू स्वयं केवल अपने इस "दुर्लभ मददगार" को प्रत्यक्ष उपलब्ध नहीं कर लेगा तू कैसे उस "परम चेतन सत्ता" तक पहुँचने में समर्थ हो सकता है ? और फिर बिना इस "दुर्लभ सत्ता" तक पहुँचे तेरा ये भयानक-2 दुखों का फेरा अथवा फाँसी कभी सुपने में भी कटनी या छूटनी केवल असंभव ही है निश्चित रूप से तू गाँठ बाँध ले । "सतिगुर-हथ-कुंजी होरत दर खुल्है नाही ।" सति+गुर "गुरू" "केवल रागमई प्रकाशित आवाज"-"सत" यानी के प्रत्येक काल में रहने वाली निरन्तर "परम चेतन सत्ता" केवल । "हथ" यानी के इस सत्ता विशेष तक पहुँचने का साधन विशेष जैसे शरीर का हाथ आत्मा के लिये कार्य करने का एक दुर्लभ साधन है निश्चित रूप से । "कुंजी" यानी के ताला जैसे कि केवल उसी की विशेष चाबी से ही खुलता है उसी तरह से जड़ चेतन के आधार "परम चेतन सत्ता अथवा अकाल पुरख परमात्मा" तक पहुँचने का उत्कृष्ट तथा निश्चित साधन केवल उसी दुर्लभ सत्ता विशेष की अपनी बनाई हुई अथवा प्रत्यक्ष की हुई विशेष चाबी अर्थात केवल "शब्द विशेष अथवा रागमई प्रकाशित आवाज" ही

है केवल निश्चित रूप से । "होरत दर खुले नाही" अर्थात तू और करोड़ों यत्न अथवा उपाय कर ले हजूरों- पातशाहों इत्यादि नकली विशेष-2 परमात्माओं के पीछे भागता दौड़ता रह सारी उम्र तेरा यह कार्य विशेष कभी भी पूरा होना तो दूर रहा शुरू भी करने में केवल असमर्थ ही साबित होगा । अर्थात यदि इस गुप्त द्वार को खोलना चाहता है तो केवल उसे ही पुकार अथवा ध्यान कर जो यहीं पर छुप कर बैठा है केवल तुझे ही ले जाने के हेतू । केवल यही छुपा हुआ "शब्द विशेष" असली मालिक अथवा सभी विशेष-2 पातशाहों को बनाने अथवा प्रत्यक्ष करने वाला "दुर्लभ विशेष" सच्चा तथा सदा से रहने वाला "समर्थ पातशाह" है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । तेरे सभी मौजूदा पातशाह केवल आखिरी गिनती गिन रहे हैं अर्थात निरंतर भुरते चले जा रहे हैं चूने की दीवार की तरह से निश्चित रूप से । "गुर पूरै भाग मिलावणिआ" गुरू पूरा अर्थात "शब्द विशेष" यानी के "रागमई प्रकाशित आवाज" केवल । भाग्य यानी के पुरुषार्थ । पिछले जन्मों में किया हुआ केवल तेरे स्वंय का पुरुषार्थ आज का केवल तेरे स्वंय का निश्चित भाग्य है जो कभी भी नहीं बदलता अनन्त प्रयत्नों के बावजूद तुझे अवश्य भुगतना ही होगा पूरा का पूरा निश्चित रूप से और अब जो तू इस जन्म में पुरुषार्थ कर रहा है ये तेरा अगले जन्मों का भाग्य है निश्चित रूप से जिसे तू अगले जन्मों में लाख कोशिशों के बावजूद भी आंशिक रूप से बदलने में भी केवल

असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से । परन्तु आज तू अवश्य निश्चित रूप से अगले जन्मों के भाग्य को अवश्य आवश्यक रूप से उत्कृष्ट बनाने में पूरी तरह से केवल समर्थ ही है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । यानी के केवल तू स्वंय ही अपने निश्चित भाग्य का निश्चित "विधाता" विशेष है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । यानी के बिना पूरे भाग्य अर्थात उस "परम चेतन सत्ता" को प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिये अनन्त जन्मों से निष्कपट हृदय से किये गये पुरुषार्थ विशेष के अभाव में ये "रागमई दुर्लभ प्रकाशित आवाज" अथवा "शब्द विशेष" का प्रत्यक्ष होना असंभव ही है निश्चित रूप से तथा इस पूरे गुरू अथवा "रागमई प्रकाशित आवाज" के अभाव में तेरा प्रभु मिलन कैसे संभव हो सकता है ? अनन्त काल के बाद भी केवल इस दुर्लभ अभाव के कारण ही तेरा उस "परम चेतन सत्ता" तक पहुँचना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से । अर्थात जिस दिन तेरा ये पूरा गुरू यानी के "रागमई प्रकाशित आवाज" प्रत्यक्ष हो जायेगी तेरा प्रभु से अवश्य आवश्यक रूप से मिलन हो ही जायेगा निश्चित रूप से क्योंकि ये "शब्द विशेष" और "प्रभु" दोनों केवल एक ही सत्ता विशेष के दो अलग-2 नाम मात्र हैं केवल निश्चित रूप से ।

इस दुर्लभ मिलन के अभाव में तेरे समस्त दुख अवश्य आवश्यक रूप से बने ही रहेगें निश्चित रूप से । यदि तू सच्चा परमार्थी है तो शीघ्र से इस दुर्लभ आवश्यक कार्य को अवश्य

सम्पन्न कर ले, स्वंय को आखिर की मुश्किल की घड़ी से बचाने के लिये पता नहीं कब ये "दुर्लभ लाईट" चली जायेगी अथवा बन्द हो जायेगी निश्चित रूप से । फिर तू करना भी चाहेगा इस दुर्लभ आवश्यक कार्य को तो "कोई विशेष" तुझे कुछ करने का यह "दुर्लभ साधन विशेष" उपलब्ध ही नहीं होने देगा निश्चित रूप से । यह "कोई विशेष" बहुत चालाकी से तेरी समस्त जमा पूँजी निरन्तर हज्म करता चला जा रहा है । जिन्हें तू मित्र समझता है उन्हीं दुर्लभ मित्रों में ये "कोई विशेष" छुप करके बैठा है निश्चित रूप से इसकी "दुर्लभ चालों" को तू सुपने में भी विचारने में केवल असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से ।

"आत्मा-परमात्मा तथा सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" तीनों एक ही "परम चेतन सत्ता" के तीन अलग-2 आवश्यक रूप विशेष हैं निश्चित रूप से । इस खेल में नौ घर "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को दिये जाते हैं निश्चित रूप से इन्हें मजबूत बनाने के वास्ते केवल । दसवें घर में असल सत्ता खामोश होकर के बैठती है । जीव अथवा परमात्मा को केवल मनुष्य के जन्म में इस पहेली को हल करना होता है अर्थात उसे अपने को "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के जाल से बचा करके जो नौ द्वारों में प्रत्यक्ष पूरी समर्था से उपलब्ध रहती हैं निश्चित रूप से दसवें अपने निज के घर तक पहुँचने के द्वार पर पहुँचना होता है "केवल मनुष्य के जन्म में-केवल जीते जी" तक विशेष रूप से । जन्म

होते ही खेल शुरू हो जाता है तथा नौ घरों में बैठी शैतानी ताकतें आत्मा को आगे बढ़ने से रोकने के लिये रूप (वस्तु-पदार्थ-सम्बन्ध) का प्रलोभन दे करके आगे बढ़ने से रोकने का भरपूर प्रयत्न करती हैं। जो आत्मा इन उपलब्ध प्रलोभनों में फंस अथवा रूक जाती है उसे इसका भुगतान अथवा जुर्माना अवश्य आवश्यक रूप से चुकाना अथवा भुगतना ही पड़ता है निश्चित रूप से। अनन्त काल के लिये भी अनन्त कल्पों के बाद भी निश्चित रूप से। इस खेल में कहीं भी कुछ भी चालाकि केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से। केवल आत्मा को रोकने के लिये ही "शैतानी ताकतें" निरन्तर नये-2 रूपों को प्रस्तुत करती रहती हैं तथा बदले में जुर्माना वसूल करती रहती हैं। जुर्माने में आत्मा को सुख अथवा दुख का घोर अनुभव होता है परन्तु उसकी स्वाभाविक समर्था अथवा सत्ता पर कुछ भी आंशिक रूप से भी प्रभाव पड़ता ही नहीं यानी कि आत्मा की स्वाभाविक समर्था प्रत्येक काल में एक रूप अथवा एक रस अर्थात स्थिर रहती ही है निश्चित रूप से। जैसे बहुत सी शैतानी पक्ष की आत्मायें अपने पक्ष को सुदृढ़ बनाने के लिये पहले स्थिति को बिगाड़ कर फिर उन्हें सुधारने का झूठा अथवा नकली दावा पेश करके स्वंय को नकली परमात्मा स्थापित करके अपनी पूजा में लगवा कर अलग-2 विकृत ढंगों से भी केवल आत्मा को भ्रम में ही रखती हैं अर्थात प्रत्येक तरीके से आत्मा को आगे बढ़ने से रोकने के

मकसद को पूरी तरह से कामयाब बनाती हैं, उसी तरह से असल प्रभु के पक्ष को भी दृढ़ रखने के लिये बहुत सी आत्मायें जो असल प्रभु के दरबार तक पहुँच चुकी होती हैं इस खेल में केवल सच्चे परमार्थी की मदद को करने के लिये धुर विशेष से प्रभु की विशेष दया को ले कर के उतरती हैं निश्चित रूप से। ये दोनों ताकतें अथवा आत्मायें विशेष (शैतानी पक्ष की आत्मायें तथा धुर की आत्मायें) अति सूक्ष्म अथवा गुप्त होने के कारण किसी को भी दिखाई नहीं देती निश्चित रूप से। नकली शौक़ रखने वाली आत्मा पर कभी सुपने में भी कोई विचार ही नहीं किया जाता इस खेल से अलग करने का निश्चित रूप से। बेशक करोड़ यत्न अथवा जिम्मेदारियाँ या ड्यूटियां विशेष-2 निभा रखी हों अनन्त जन्मों से अनन्त काल तक, इस विशेष-2 धन्धे पर कोई विचार ही नहीं है सुपने में भी। वह नकली शौक़ रखने वाली विशेष-2 आत्मा केवल इन्हीं शैतानी तीनों मुल्कों में नकली परमात्मा हजूर-दाता-पातशाह इत्यादि बनीं या घोर-2 पार्कों में दुर्लभ-2 सैर विशेष करती हुई आपको अवश्य दिखेंगी आवश्यकतानुसार जब आप अपने स्वंय के निज घर विशेष के केवल द्वार पर ही पहुँचोगे तो निश्चित रूप से। यह खेल इस तरह से प्रभु द्वारा रचा गया है कि केवल एक वासना अथवा कामना रखने वाली आत्मा को भी यदि कोई घसीट करके भी ले जाना चाहेगा ना, तो निश्चित रूप से जान लो कि केवल एक ही वासना रखने वाली आत्मा विशेष भी

चलना तो दूर रहा केवल हिलने में भी केवल असमर्थ ही साबित होंगी निश्चित रूप से । फिर सिफारिशों अथवा मोहरों का क्या अथवा कितना अर्थ है ? खुद ही विचार लो ! जीव की प्रत्येक वासना प्रत्येक जून विशेष अथवा पिंजरे से जुड़ी हुई है निश्चित रूप से । कामना भी रखे आत्मा विशेष और फिर पिंजरा विशेष भी रोशन न करना पड़े ये दोनों अवस्थायें अलग-2 केवल दुर्लभ ही रहेंगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । अपने पक्ष को सुदृढ़ बनाने के लिये दोनों पक्ष की आत्मायें निरन्तर प्रभु के ध्यान में ही लगी रहती हैं । प्रमाद का केवल एक ही अर्थ है "प्रभु की दया विशेष" को खो लेना । इसलिये दोनों पक्ष पूरी तरह से सावधान रहते ही हैं निश्चित रूप से । एक मिसाल से स्थिति समझने में आसान हो जाती है । जैसे एक बच्चा जब तक खिलौनों में उलझा अथवा खेलता रहता है कोई उस पर ध्यान नहीं देता उल्टा उसे केवल उलझाने के लिये ही नये-2 खिलौने विशेष, बच्चे के आगे प्रस्तुत किये जाते हैं । जब तक बच्चा खेलता रहता है माँ अपने कार्य में व्यस्त रहती है लेकिन जब बच्चा समस्त महंगे अथवा चाबी के खिलौने को भी ठुकरा ही देता है और जोर-2 से गला फाड़ करके केवल माँ-माँ ही चिल्लाता है निरन्तर निश्चित रूप से, तो तभी केवल माँ रूपी दुर्लभ चाबी विशेष से चलने फिरने वाला विशेष खिलौना उपलब्ध अथवा प्रत्यक्ष होता ही है निश्चित रूप से तथा उस "दुर्लभ माँ" की "दुर्लभ गोद विशेष" में पहुँच करके

बच्चा अपने को पूरी तरह से सुरक्षित कर ही लेता है सदा के लिये निश्चित रूप से । इस मिसाल से प्रभु का संदेश प्रत्यक्ष हो जाता है निश्चित रूप से । अब आपने विचारना है कि कौन आप का सच्चा तथा समर्थ मददगार है । तथा कैसे कितनी जल्दी आप अपनी इस उपलब्ध पहेली को केवल हल करने में ही समर्थ हो सकोगे ? केवल चिट्ठी अथवा पैगाम को बार-2 पढ़ने या रटने से आप का कार्य विशेष सिद्ध होने वाला नहीं है निश्चित रूप से ! मिसाल के तौर पर एक बेटा पत्र भेजता है पिता को और उस पत्र में ताकीद करता है कि आप विशेष स्थान पर खास दुकानदार से खास-2 लेखकों की पुस्तकें शीघ्र ही भेजें । मेरे इम्तिहान सिर पर हैं । मेरी पढ़ाई इन पुस्तकों के अभाव के कारण रूकी हुई है निश्चित रूप से । जितनी जल्दी आप पुस्तकें भेजेंगे मेरा रूका हुआ पढ़ाई का कार्य सम्पन्न हो सकेगा और इम्तिहान में पास होने में समर्थ हो सकूँगा निश्चित रूप से । अब "पिता श्री" का क्या धन्धा है कि चौपाल पर जमात मित्रों और संबंधियों की रोज तीनों वक्त एकत्र करते हैं और बड़े शान से पत्र को पढ़ कर बार-2 सुनाते हैं, घर पर भी जब भी समय उपलब्ध होता है पत्र पढ़ने में ही केवल व्यस्त रहते हैं निश्चित रूप से । पर कभी भूले से भी चिट्ठी में लिखित अनुसार न तो बाजार जाते हैं न पुस्तक भेजने का ख्याल ही करते हैं निश्चित रूप से । बस नाचने कूदने ढोल-

बाजे बजाने में ही लगे हैं केवल चिट्ठी को पालकी में सजा कर रखा है और पालकी को सिर पर धरे व्यस्त हैं अपनी दुर्लभ हस्ती को निरन्तर मिटाने में ! अब आप सोचो उस बेचारे बेटे का कल्याण कैसे सम्भव होगा कभी सुपने में भी ? केवल असंभव ! फेल होना इम्तिहान में निश्चित है । यही हाल हम सब का है वो दुर्लभ चिट्ठी "अकाल पुरख परमात्मा" की आत्मिक प्रेरणा लिख कर के केवल आप यानी के आत्मा दुर्लभ के कल्याण के हेतू "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब" के रूप में आपको दे दी गई है । यही "पिता श्री" वाला धन्धा ही हम सब ने अपना रखा है केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को लाभान्वित करने के हेतू ही निश्चित रूप से । इसी विस्तृत चिट्ठी का छोटा यानी के इशारे के रूप में वक्त की जरूरत को मध्य नजर रखते हुऐ केवल "एक अक्षर" लिख कर के आप के हाथ पर धर दिया गया है केवल आप स्वंय के निज कल्याण हेतू निश्चित रूप से अब इस "अकाल पुरख परमात्मा की आत्मिक प्रेरणा रूपी पैगाम दुर्लभ" के अनुसार अपनी जिन्दगी को व्यवहारिक बनाना केवल आप का "निजी विशय" अथवा व्यवसाय ही है निश्चित रूप से ! इसी प्रभु के संदेश अथवा पैगाम विशेष को आप तक पहुँचाने में अकथ विघ्नों का सामना करना पड़ रहा है निरन्तर निश्चित रूप से । इस वक्त भी अनन्त "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" निरन्तर इस कलम को रोकने का भरसक

अकथ प्रयत्न विशेष रूप से कर रही हैं निरन्तर, तथा इनके प्रभावों से सुरक्षित रखने के लिये अनन्त दुर्लभ आत्मायें "धुर विशेष-प्रभु दरबार" की प्यारी दुलारी तथा समर्थ ताकतें भी निरन्तर अपनी जिम्मेदारी को बेखूबी निभा रही हैं निश्चित रूप से । जिसे लफजों में मर करके भी व्यक्त करना केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से । "हर लफज" साँप के मुँह से निवाला निकालने जैसा घोर अकथ विघ्नों से भरे हुए प्रयत्नों को करने के बाद ही केवल प्रत्यक्ष होना संभव हुआ है निश्चित रूप से ! इन विघ्नों में एक विघ्न ये भी रहा है कि इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को कुछ ऐसी विशेष-2 आत्माओं का भी "दुर्लभ विशेष योगदान" प्राप्त हुआ है जो निश्चित रूप से "(राधास्वामी) सत्संग-ब्यास" से सम्बन्ध रखती हैं । इनका कार्य करने का स्थान विशेष तथा उपलब्ध-ताकतें विशेष कुछ और ही हैं निश्चित रूप से । इन में से ज्यादातर दुर्लभ आत्मायें विशेष इसी विशेष आर-एस-सत्संग से सम्बन्ध रखती हैं तथा पैगम्बर श्रेणी की दुर्लभ आत्मायें विशेष-2 हैं । इन्हें कुछ आसमानी ताकतों अथवा सिद्धियों विशेष की सुरक्षा अथवा साधन या ताकत उपलब्ध है निश्चित रूप से, दावा संतमत-नाम-सतगुरू का है । घौर-2 लानत है उन दुर्लभ आत्माओं विशेषों को जो मददगार रूपी साधन दुर्लभ आवश्यक बनी "मनुष्य का दुर्लभ आवश्यक जन्म" विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाने में निश्चित रूप से जिन "आत्माओं महानों विशेषों"

का जो "मनुष्य धर्म" दुर्लभ आवश्यक में प्रत्यक्ष या अदृश्य रूप से "घोर विघ्न" विशेष-2 प्रस्तुत करने में स्वयं को श्रेष्ठ स्थापित विशेष कर रही हैं मनुष्यता पर निश्चित लानत रूपी बोझ प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करते हुऐ जी रही हैं तो केवल निश्चित रूप से "आत्मिक मौत" मरते हुए यकीनी तौर पर "कोट-2 घोर महालानत" है उन दुर्लभ-2 आसमानी ताकतों विशेषों पर भी जो ऐसी निकृष्ट लोभी-स्वार्थी रूपी "खूनी दरिन्दों" को मदद रूपी दुर्लभ-2 विशेष-2 आवश्यक सुरक्षा विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाने में निरन्तर दुर्लभ घोर व्यस्त हैं प्रमाणिक तौर पर निश्चित रूप से "अनन्त घोर-2 महालानत" है उन पैगम्बर-नबी-पातशाहों रूपी निकृष्ट मनुष्यों विशेषों को भी, जो इन कमीनी आसमानी ताकतों के दुर्लभ-2 महान-2 नुमायदें विशेष-2 बने बैठे हैं केवल "परमात्मा" के नाम पर एक "भयानक काला सा धब्बा" विशेष स्थापित करते हुऐ पूरी मनुष्य जाति दुर्लभ आवश्यक विशेष को पूरी तरह से अन्धे कुँऐं विशेष में ढकेलने का पूर्ण समर्थ साधन विशेष दुर्लभ-2 स्वयं को स्थापित विशेष करते हुऐ प्रत्येक काल में केवल अनन्त काल तक के लिये घोर भयानक-2 तड़पा देने वाले नर्कों में रहने का दुर्लभ आवश्यक सामान विशेष ही बाँध रही है चतुर विद्वान आत्मायें दुर्लभ-2 महान-2 निश्चित रूप से। मनुष्यता पर लानत रूपी घोर भयानक खूनी भेड़िये रूपी अधूरी आसमानी ताकतों तथा पैगम्बर नाम के

महाराज निकृष्ट पातशाहों विशेषों मनुष्यों विशेषों रूपी घौर भयानक हलाहल विश से भरपूर लबालब भरे हुए अजगरों से पूरी तरह से बचने का पूर्ण सुरक्षित समर्थ आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" का ही शरणार्थी विशेष बनना है दुर्लभ सच्ची आत्मा विशेष को व्यवहारिक रूप से प्रमाणिक तौर पर दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष का चरितार्थ स्वरूप स्वंय को प्रत्यक्ष स्थापित विशेष करते हुऐ निरन्तर प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर "जिह बिध गुर उपदेसिआ सो सुन रे भाई-नानक कहत पुकार के गह प्रभ सरनाई।" सिद्धि विशेष का केवल एक ही कार्य होता है सम्बन्धित आत्मा जिसे विशेष ताकत उपलब्ध होती है, केवल उस विशेष आत्मा के संकल्प को ही सिद्ध अथवा पूरा करना प्रत्येक काल अथवा अवस्था में निश्चित रूप से। यदि ऐसा न हो तो फिर उपलब्ध ताकत अथवा सिद्धि विशेष का क्या अर्थ ? इन "दुर्लभ आत्माओं" के इस "दुर्लभ विशेष योगदान" से किसी दीन-हीन आत्मा का साधारण सा शौक़ "प्रभु" का "फट" कर के सामने आ ही गया। जिस "फटे" विशेष का दुर्लभ नतीजा आपके स्वंय के हाथ में इस वक्त प्रत्यक्ष उपलब्ध है निश्चित रूप से, इन दुर्लभ पैगम्बर श्रेणी की आत्माओं का इन "दुर्लभ-सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की "दुर्लभ मदद विशेष" करने का बदला एक दीन-हीन सी आत्मा भला किस तरह से चुका सकती है। बेशक अपना सब कुछ इन दुर्लभ आत्माओं पर

न्यौछावर कर देने के बावजूद भी इन आत्माओं का "दुर्लभ एहसान" विशेष तो फिर भी शेष अवश्य आवश्यक रूप से बाकी बचा ही रह जायेगा निश्चित रूप से । अर्थात समस्त कुल परिवार इस "दुर्लभ विशेष एहसान" के बोझ तले अनन्त काल तक अवश्य दबा ही रहेगा निश्चित रूप से। इसी "दुर्लभ विशेष एहसान" अर्थात "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की दुर्लभ मदद करने के बदले इन सभी "दुर्लभ-2 आत्माओं" को कोट-2 धन्यवाद तथा ये उम्मीद की जाती है उनसे कि ये "दुर्लभ शैतानी ताकतें मदद रूपी योगदान" को ये "दुर्लभ विशेष आत्मायें" निरन्तर "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को अनन्त काल तक बिना स्वार्थ, इसी तरह से उपलब्ध करवाती ही रहेंगी ताकी कुल-परिवार की "किन्ही विशेष-2 आत्माओं" का स्वयं के "निज घर" जाने का दुर्लभ कार्यक्रम शीघ्रता से सम्पन्न होता ही रहे निश्चित रूप से । स्वयं के निज कल्याण हेतू ऐसे "प्रिय मित्र अथवा सम्बन्धी विशेष" से भी सदा सावधान रहना ही केवल श्रेयस्कर है निश्चित रूप से जो केवल अपने स्वयं के ही लोभ अथवा स्वार्थो की पूर्ति के लिये विपक्ष अथवा शत्रु पक्ष से सदा मेल करने की ताक विशेष में रहता है निरन्तर-सावधान रहो ! इस "दुर्लभ प्रभु सदेश अथवा पैगाम" का भाव कोई नया मत-धर्म चलाना कदापि हरगिज नहीं है । न ही किसी की निन्दा अथवा बढ़ाई ही करना है । सख्त लफजों अथवा मिसालों का भाव केवल सोई हुई दुर्लभ आत्मा को जाग्रत करना

मात्र है । किसी भी आत्मा की "पसंदगी अथवा न पसंदगी" का इस दुर्लभ प्रभु संदेश में एक लफज भी नहीं है निश्चित रूप से, जैसे-2 "लफज विशेष"-"धुर विशेष" से उतरे हैं वैसे के वैसे केवल लिख कर के आपकी अमानत आपके हवाले कर दी गई है । यह दुर्लभ संदेश केवल निश्चित रूप से "अकाल पुरख परमात्मा की एक दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा" है धुर विशेष से केवल आत्मिक कल्याण के हेतू उपलब्ध प्रत्यक्ष समय की निश्चित रूप से । इससे अलग कुछ और भाव प्रचारित किये जाते हैं तो वह केवल प्रचारकों की अपनी स्वयं की विशेष "मनमत" ही है निश्चित रूप से । शोर केवल वही मचाता है जिसके अन्दर खुटका होता है ! "गुरूमत" का इन "दुर्लभ प्रचारों" से दूर-2 तक का कोई भी सम्बन्ध ही नहीं है निश्चित रूप से । "गुरू अथवा शब्द विशेष" का भाव केवल जन्मों-2 से सोई हुई आत्मा विशेष को जाग्रत करना मात्र है निश्चित रूप से । क्योंकि लुटता वही है जो सोया हुआ होता है तथा जो जागता है वो अवश्य स्वयं को लुटने से बचा ही लेता है निश्चित रूप से । जो अपनी सुरक्षा करता है अवश्य कोई और भी निश्चित रूप से उसको सुरक्षित कर ही देता है यकीनी तौर पर आवश्यक रूप से । जो सोना अथवा लुटना पसंद करता है अवश्य दूसरा भी ताली पीटता ही है क्योंकि उसका तो ये केवल एक तमाशा अथवा खेल मात्र ही तो है निश्चित रूप से !